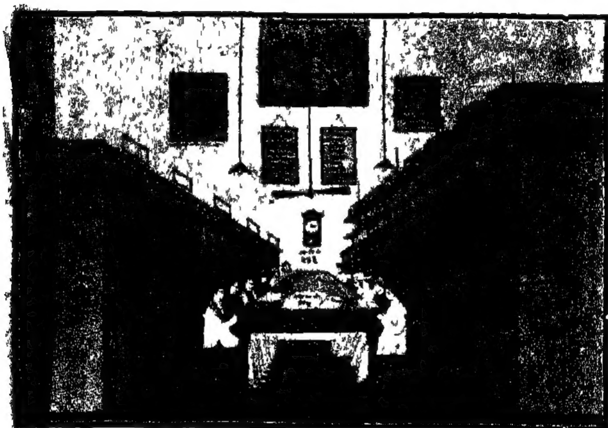
# [illegible]लि निषेध



प्रकाशक—
श्री सन्मति पुस्तकालय ( ट्रैक्ट विभाग )
नं० २, बासतल्ला स्ट्रीट, कलकत्ता

[illegible] १९३८
[illegible]०००

ले०—पं० धीरेन्द्रकुमारजी शास्त्री न्यायतीर्थ

है कि इसके
आता। सभी
महत्व दिये
ई देते हैं, यह
श्य होना चाहिये
त्सक प्रयत्न करें
यों को अवश्य ही

जी शास्त्री न्याय
' द्वारा हिंसाका

तथन लिखा है, इसमें ... निषेध किया गया है—यह संग्रह किया है। यह महत्व पूर्ण है, पहले यह 'अहिंसा प्रचारक मंडल' बनारसके द्वारा प्रकाशित हो चुकी है और इसके द्वारा अहिंसा प्रचार भी अच्छा हुआ है। अतः अब यह लेखकके आग्रहसे श्री सन्मति पुस्तकालय कलकत्ता के ट्रैक्ट विभाग द्वारा प्रकाशित की जाती है। जन साधारण इससे लाभ लेंगे और बतला देंगे कि हम आगेसे किसी प्रकारकी हिंसा नहीं करेंगे, तभी हम लोग परिश्रम सफल समझेंगे।

—माणिकचन्द बैनाड़ा
मन्त्री—श्री सन्मति पुस्तकालय
ट्रैक्ट-विभाग

ता० १०-२-३७
२, बाँसतल्ला स्ट्रीट
कलकत्ता



# अहिंसा परमो धर्मो
## यतो धर्मस्ततो जय.

# पशुबलि निषेध

**दयामूलो भवेद्धर्मो दया प्राणानुकम्पनम्।**
**दयायाः परिरक्षार्थं गुणाः शेषा प्रकीर्तिताः॥**

बन्धुओ ! आज भारतकी दशा देखते हुए हृदय विदीर्ण होता है। पूर्वकी और आजकी अवस्थाका जब हम तुलनात्मक दृष्टिसे अध्ययन करते हैं, तो हमें महान् अन्तर प्रतीत होता है। जहा पहले मनुष्य बलशाली धार्मिक और सुख शान्तिसे परिपूर्ण थे वहां आज प्राय युवा अवस्थामें ही बुढ़ापा आ जाता है। पापका साम्राज्य और दरिद्रता व अशातिका ताडव नृत्य हो रहा है। यहापर घी-दूधकी नदिया बहा करती थी, घी-दूधके लिये प्रत्येक घरमे गौओका वास था। इसीलिये घी-दूध बेचना पाप समझा जाता था कारण कि किसीको खरीदनेकी आवश्यकता ही नहीं थी, और उन्हीं गो-माताके पुष्टिकारक दूधसे पल-पलकर हमारे पूर्वज इतने वीर स्वदेशाभिमानी हो गये हैं। महाराणी लक्ष्मीबाई जैसी वीरागना, राणाप्रताप, छत्रपति शिवाजी जैसे वीर पुरुष अपने देश, हिन्दू धर्म और गौमाताकी प्रतिष्ठाके लिये सब कुछ उत्सर्ग करनेको तत्पर रहते थे। उन्होंने कभी अधर्मियोंके सामने, गोवध करनेवालोके सामने सर नही झुकाया और मृत्युका भी सहर्ष आलिगन किया। जब हम आज भारतवर्षकी दशापर दृष्टिपात करते हैं तो सब जगह हा-हा कारके भीषण कोलाहलसे आकाश परि-

पूर्ण नजर आता है। जो आर्य देश स्वर्णकी चिड़िया कहलाता था उसीके वासी भरपेट भोजन नहीं पाते। घी-दूधकी तो बात ही क्या? इनके कारणोंको यदि हम सूक्ष्म दृष्टिसे और साफ हृदयसे सोचें तो हमें प्रत्यक्ष मालूम होगा कि उसका मुख्य कारण गोवध ही है। जबसे भारतमें मुसलमान लोग आये और उन्होंने गो-वध प्रारम्भ किया तभीसे भारतकी दुर्दशाका श्रीगणेश हुआ। मुसलमानोंके आगमनसे पहिले यहांपर गो-वध नहीं होता था और इसी कारण यह हमारा देश उन्नतिके उच्च शिखरपर था। आज हम हिन्दू धर्मावलम्बियोंके लिये अत्यन्त दुःख और लज्जाका विषय है कि हमारे ही देशमें हमारी आंखोंके सामने नित्यप्रति हजारों गउवें जो एक मात्र इस भारतकी सम्पत्तिका मुख्य कारण हैं, और जिनको हम माताके नामसे पुकारते हैं, बध की जाय। गायोंके अभावसे ही दूध कितना महगा हो रहा है। साधारण जनता उसको प्राप्त ही नही कर सकती। हमारे बच्चे घी-दूधके अभावसे दुर्बल हो रहे हैं। पर्याप्त और मन्दे बैलो के न खरीद सकनेके कारण गरीब किसान बहुत कठिनाईसे अपना काम चलाते हैं। पैदावार बहुत कम होती है। इससे उनका जीवन दारिद्र्यमय हो जाता है। उनकी दरिद्रता ही भारतकी दरिद्रता है। भारतकी ८८ प्रतिशत जनता ग्रामोंमे ही किसान रूपमें बसती है। इसलिये यदि गायोंके पर्याप्त होनेसे उनको अच्छे घी-दूध और गाय-बैलके गोबरका खाद मिले तो कृषिमें बहुत उन्नति हो और भारत फिर वही सोनेकी चिड़िया कहलाने लगे।

## गोवधमें पशुबलि ही मुख्य कारण है—

जब हम गोवधको रोकनेका प्रयत्न करते हैं तो हमारे सामने एक बहुत

बड़ी कठिनाई आ उपस्थित होती है। हम मुसलमानोंसे कहते है कि भाई गोवध न करो इससे भारतका पतन हो रहा है। तो वे उत्तर देते हैं कि— **"जब आपलोग अपने मन्दिरो तकमे पशुकी हत्या करते हैं तो हम भी करें इसमें क्या दोष है? आप पशुबलिको धर्म विहित बतलाते हैं तो हमारे यहां भी गायकी कुरबानी करना धर्म बतलाया है। इसलिये यदि आपलोग यह बन्द नही कर सकते तो हम भी क्यों करे।"** ऐ हिन्दुओ! अब विचारणीय विषय है कि क्या आपलोग गोबध बन्द कराना नही चाहते? यदि चाहते हैं तो अपने पवित्र मन्दिरोंसे इस पशुहत्या रूपी पिशाचिनीका सर्व प्रथम काला मुँह करो।

## पशुबलि प्रथाका खण्डन

निष्पक्ष दृष्टिसे यदि देखा जाय तो यह प्रथा सर्वथा अनुचित है। कोई भी सहृदय व्यक्ति इसके औचित्यको स्वीकार नही कर सकता। पूजा तीन तरहकी है। सात्विकी, राजसी और तामसी। सात्विकीय पूजा फल, पुष्प, मेवा, मिष्टान्न, घी, शक्कर, दूध, पूवा, केला, गुड़, नारियल, खीर, तिल्ली, दही, वगैरहसे की जाती है। और यही सर्वोत्तम है, फिर क्यों हम तामसी पूजा करें? जिसके करनेपर हमे प्रायश्चित करना पड़े। पहले कीचड़मे पंर लिपटाकर धोनेकी अपेक्षा कीचड़मे न घुसना ही अच्छा है।

भगवती दुर्गाको जब हम जगत-जननी और जगत रक्षिका मानते हैं, और यह भी स्वीकार करते हैं कि छोटे प्राणीसे लेकर बड़े तक उनके प्रिय पुत्र हैं तो फिर क्या वे मूक पशु उसके पुत्र नही हैं? जो हम उनका बध उसीकी माताके समक्ष करे। कोई भी माता अपने खोटे से खोटे पुत्र

को भी दुखी नही देखना चाहती। वह नही चाहती कि किसी पुत्रका रक्त-पान करूँ। देखा जाता है कि जिस माताके चार पुत्र होते हैं उन सबको वह एक दृष्टिसे देखती है फिर कोई कारण नही कि वह अपनी तृप्तिके लिये मूक पशुओंका रक्त मांगे। ससारमें अपराधीको दण्ड दिया जाता है। पशु मूक निरपराध है। उन्होंने कभी झूठ नही बोला, चोरी नही की, जारी नहीं की, किसी किस्मका कोई अत्याचार नही किया। फिर क्या कारण है कि हम उस मूक निरपराध प्राणीकी गर्दनपर छुरी चलाये और वह भी धर्मके नामपर ? जगत जननीके सामने पशुवध करना उस पवित्र मन्दिरको रक्तसे रगकर अपवित्र करना हिन्दू धर्मके अहिसा सिद्धातको और दुर्गा माताके नामको कलकित करना है। आश्चर्य तो यह है कि बलि करनेवाले उसमें होनेवाली हिसाको भी "वैदिकी हिसा, हिसा न भवति" ऐसा कहकर हिसा नही मानते। यह कितनी दुर्बल युक्ति है। यह मनगढन्त हेतु केवल अपनी स्वार्थ साधनाके लिये ही है। ऐसे-ऐसे हेतुओंसे ही भोले-भाले लोग उनके फन्देमे फँसते हैं और इसीमे उनके स्वार्थकी सिद्धि होती है। जो हिसा है वह हिसा ही है। आप कहेंगे कि बध करनेसे उस पशुको कोई दुःख नहीं होता। अगर ऐसा है तो वह क्यो रोता चिल्लाता है ? क्यों तड़फड़ाता है और उससे बचनेकी कोशिश करता है ? जैसे प्राण हमारे हैं वैसे उसके भी हैं अगर हमको जरासा कांटा लगने पर दुःख होता है तो क्या उसको छुरीसे काटनेपर भी दुःख नहीं होता ? अपितु अवश्य होता है।

कुछ मनुष्य कहते हैं कि बलिसे प्राणी मरकर स्वर्गको जाता है। यदि यह सत्य है तो अपनी ही बलि क्यों न की जाय ? इससे अनायास ही स्वर्ग मिल जायगा। और फिर नर बलि और सिंह आदिकी बलि न

देकर क्यों उन मूक पशुओंकी ही बलि दी जाती है। और वह दीन पशु तो आपसे यह भी नहीं कहता कि भाई मुझे स्वर्ग पहुचा दो मैं यहाँपर दुखी हूँ किन्तु वह तो केवल घास वगैरह खाकर ही अपनेको सुखी मानता है। वह तो स्वर्ग भेजनेवाले वधिकसे कहता है कि—

**नाहं स्वर्गफलोपभोगतृषितो नाभ्यर्थितस्त्वंमया,**
**सन्तुष्टस्तृणभक्षणेन सततं हन्तुं न युक्तस्तव।**
**स्वर्गं यान्ति यदि त्वया विनिहता यज्ञे ध्रुवं प्राणिनो,**
**यज्ञं किं न करोषि मातृपितृभिः पुत्रैस्तथाबान्धवै. ॥**

यही प्रार्थना वह इस हिन्दी कवित्तमे भी करता है।

## कवित्त

कहे पशु दीन सुन यज्ञके करैया मोहि, होमत हुताशनमें कौन-सी बड़ाई है ? स्वर्ण सुख मैं न चहौं "देओ" मुझे यों न कहूँ, घास खाय रहूँ मेरे जीमे यही आई है। जो तू यह जानत है वेद यह बखानत है, यज्ञ मरो जीव पावे स्वर्ग सुखदाई है। ताते क्यो न मारे "वीर" अपने कुटुम्ब ही को मोहि मत मारे जगदीशकी दुहाई है।

यह दीन पशु तो वधिकसे यही प्रार्थना करता है।

फिर भी यदि वह धर्मान्ध अविवकी कुछ नही सोचता और उसकी हत्या करनेपर उतारू ही है तो वह पशु जगतकी रक्षिका अपनी माता दुर्गासे फरयाद करता है—

### कविता

जगदम्बे जग दुख हरन हो, मेरे दुःखोको दूर करो।
मैं कटता हूँ बेकाम आज, मेरे कष्टोंको दूर करो॥

जगदम्बे जब तुम जगमाता तब मेरी भी तो माता हो ।
यह पुत्र तुम्हारा कटता है, इसके प्राणोंका त्राण करो ॥
माता मैं बेकसूर कटता, मैंने न कोई अपराध किया ।
परवस्तु आज तक छुई नहीं, मेरे दर्दोंको दूर करो ॥
मिथ्या भाषण अरु हिंसादिक मैंने न आज तक कभी किया ।
बेरहम आज क्यों काट रहे दुखियाके दुखको दूर करो ॥
अन्यायीका दण्डित होना, दुनियांमें न्याय सभी कहते ।
पर बे कसूर क्यो कटे मरें इस न्याय नीतिका ध्यान धरो ॥
माता जब दया भावसे तुम सब जीवोमें नित रहती हो ।
तब यह खूनी दरिया कैसा इसको तुम जड़से दूर करो ॥
जलता है हृदय मात मेरा अरु प्राण तड़फते अम्बे ! आज ।
यह विषम वेदना सता रही इससे मेरा उद्धार करो ॥
जगदम्बे ! अब क्या कहू बात ये प्राण कन्ठमे अटक रहे ।
यह छुरो चलेगी कुछ क्षणमे, इन बेरहमोसे त्राण करो ॥

स्वय सहृदय पाठकगण बलिके लिये लाये गये पशुकी दयनीय अवस्था और दुःखका अनुमान कर सकते है। मन्दिरमे पशुकी हृदय विदारक आह और रक्तपातके कारण बहुतसे दयालु दुर्गाके भक्त पुरुषोंका मन्दिरमे जानेका भी साहस नही होता। इसलिये प्रत्येक हिन्दूका परम कर्तव्य है कि मन्दिरको इतना पवित्र, शान्त और सुखदाई बनावें जिससे प्राणिमात्र उसके दर्शन कर अपनेको पवित्र धार्मिक और सुखी बना सके ।

अब हम बलिप्रथाके विरोधमे वेद, पुराण, मनुस्मृति आदि ग्रन्थोंके अनेक प्रमाण उपस्थित करते है—

**अष्टादशपुराणेषु व्यासस्य वचनद्वयम् ।**
**परोपकारः पुण्याय पापाय परपीड़नम् ॥**

अर्थात्—१८ पुराणोंमें व्यासके दो वचन मुख्य हैं। परोपकारसे पुण्य होता है और दूसरेको दुःख देनेसे पाप होता है।

**अन्यञ्च**—जीवोंकी दयाको जाननेके लिए परम प्रीति और आनन्दसे शिवजी, पार्वतीसे पूछते हैं—

जीवानुकम्पां विज्ञातुं ततो दुर्गां सदाशिवः ।
पप्रच्छ परमप्रीत्या गूढमेतद्वचो मुदा ॥
सर्व्वे विष्णुमया जीवास्त्वद्भक्ताश्च कथंशिवे ।
श्रुतं मया तवोद्देशे कुर्य्युः कामनया वधम् ॥
महान् सन्देह इति मे ब्रूहि भद्र ! सुनिश्चितम् ।
शङ्करी तद्वच श्रुत्वा शिववक्त्रविनिर्गतम् ।
भीतात्यन्तं हि ब्रह्मर्षे ! प्रत्युवाच सदाशिवम् ॥

पार्व्वत्युवाचः—

ये ममार्च्चनमित्युक्त्वा प्राणिहिंसनतत्पराः ।
तत्पूजनं ममामेध्यं यद्दोषात्तदधोगतिः ॥
मदर्थे शिव ! कुर्व्वन्ति तामसा जीवघातनम् ।
आकल्पकोटि निरये तेषां वासो न संशयः ॥
मम नाम्नाथवा यज्ञेपशुहत्यां करोति यः ।
क्वापि तन्निष्कृतिर्नास्ति कुंभीपाकमवाप्नुयात् ॥
पशून् हत्वा तथा त्वां मां योऽर्चयेन्मांसशोणितैः ।
तावत्तन्नरकेवासो यावच्चन्द्रदिवाकरौ ॥ इत्यादि ॥

इति शब्द कल्पद्रुमावलि. शब्दान्तर गत पद्मोत्तर
खण्ड १०४, अध्याय १०५ का बचन।

भाषार्थ—हे दुर्गे ! मेरी यह जानने की इच्छा है कि जब सब जीव विष्णुमय हैं और तेरे नामपर तेरे आगे जो जीवोका स्वर्गादिकी कामनासे बध करते हैं उसका क्या फल है ?

दुर्गा—जो लोग "यह भगवतीकी पूजा है" ऐसा कहकर प्राणियोंकी हिसामे तत्पर हैं वह पूजा निन्दनीय है इस दोषसे उनकी अधोगति ही होगी। हे शिव ! जो मेरे लिए तामस जातिके लोग जीव घात करते हैं उनका करोड़ो कल्पकाल तक नरकमे वास होगा इसमें कोई सन्देह नही हैं। देवके लिए, पित्रोके लिए अथवा अपने लिए जो प्राणी हिसा करता है, वह रौरव नरकमें करोड़ो कल्पकाल तक रहेगा।

हे शिव ! जो मोहसे जीवोकी हत्या करता है वह इकोस वार मरकर उन योनियोमें पैदा होता है। यज्ञमे पशुओको मारकर जो खूनका कीचड़ करता है उसके जितने रोम हैं उतने ही बार वह नरकमे गिरेगा।

**नरकके अधिकारी**—बधका उपदेश करनेवाला, स्वय बध करनेवाला, बिक्री करनेवाला, खरीदनेवाला ये हैं। जो स्वय किसी कामनासे, अज्ञानसे मोहित होकर अन्य विविध जीवोको मारता है, तथा देवोके यज्ञमे, पित्रोके श्राद्धमें, तथा किसी भी मागलिक कार्यमे जीवोंका घात करता है उसका नरकके सिवाय कही स्थान नही। पशुओंको मारकर उनके रक्तसे हमे तुम्हे जो पूजता है, उसका तब तक नरकमें बास होगा जबतक सूर्य-चन्द्रमा हैं। हे शम्भू ! यज्ञको आरम्भ करके जो पशुघात करता है वह चाहे इन्द्र भी हो अधोगतिको जाता है।

**शिक्षाः**—हे शिव जो इस भव और परभवसे तिरना चाहता है वह सर्व जगत विष्णुमय होनेसे किसी प्राणीका बध न करे ! सब जीवोंकी दयामें तत्पर होकर जो जीवोको मरनेसे वचाता है, वह कृष्णचन्द्रका अति प्रिय हो कर सर्व रक्षाको करने वाला होता है। मेरे नामसे अथवा यज्ञमें जो पशुओं-को मारते हैं उनका छुटकारा कभी नही हो सकता और वे कुम्भी पाक नरक मे गिरेंगे। हे शिव ! जो पडितजन जीवोंको वधसे बचाते हैं उनके पुण्यका क्या वर्णन करें। वे ब्रह्माण्डकी रक्षा करनेवाले होते हैं। और इस लोक तथा परलोकमे दु खोंसे छूटते हैं। यज्ञ स्तम्भमे बाधकर, पशुओंको मारकर जो खूनका कीचड़ करते हैं अगर वे पुरुष स्वर्गको प्राप्त होवें तो बतलाइये नरककी कौन जायगा ? उसका सारा कुटुम्ब धन आदि नष्ट हो जायगा। जगदम्बा किसीके खूनकी प्यासी नही है। इसके विषयमें निम्नलिखित कविता पठनीय है—

हा ! घोर पाप दुर्गाजीके मन्दिरमें पशू चढ़ाते है।
उस परम पवित्र जगहको ये पापी अपवित्र बनाते हैं ॥
संसारकी जब उसको कहते दुख हरनेवाली माता है।
फिर क्यों उसके पुत्रोंकी ही गर्दनपर छुरी चलाते हैं ॥
उस मूक पशूकी आहोका पापीको दण्ड मिलेगा ही।
नहि रह सकते वे सुखी कभी परलोकको नर्क बनाते है ॥
गर मूक पशू बलिसे मरकर परभवमें स्वर्गको जायेंगे।
फिर क्यों नहिं पुत्र पिताकी या भाईकी बलि चढ़ाते हैं ॥
नहिं प्यासी श्रीजगदम्बाजी अपने पुत्रोंके रक्त की है।
वह भूखी सच्ची भक्तिकी है फिर क्यों ये खून बहाते हैं ॥

सब वेदों और पुराणोंमें हिंसाको पाप बताया है।
और परमो धर्म अहिंसाको ही परम धर्म बतलाते हैं॥
हिंसाको करना दूर यही हिन्दूका मतलब होता है।
फिर क्यों इन अत्याचारोंको भारतमें नहीं मिटाते हैं॥
गोवध भी होगा बन्द तभी जब पशू बलि रुक जायेगी।
फिर बतलाओ क्यों गोवधको नहिं बन्द कराना चाहते हैं॥
गर सच्चे भक्त हो देवीके तो प्राणिमात्रपर दया करो।
बलि देवो मेवा पुष्पोंकी यह पूज्य गुरू फरमाते हैं॥
ये है कलङ्क जो हिंसाका पे हिन्दू वीरो दूर करो।
जगको फिर सुधा अहिंसाका प्याला क्यों नहीं पिलाते है॥

अन्यच्च—सब प्राणियोंमें विष्णु परिपूर्ण हैं—

यथा—"सर्वं भूतमयो विष्णु परिपूर्ण सनातन" श्लोक ३३, अ० १६। "सर्वविश्वात्मक विष्णुम्" ना० पु० पू० ख० अ० ३२। "आगीनः सर्वभूतेषु" वा० पु० अ० ९४।

"ईश्वरः सर्वेषु भूतेषु भगवानेवास्त ईश्वर
इति भूतानि मनसा कामैस्तैः साधु मानयेत्"
( भ० स्क० ७ अ० ७ )

यज्ञ शब्दका अर्थ अहिंसा होता है।—

यज्ञ शब्दका दूसरा नाम अध्वर भी है। अध्वर शब्दका अर्थ वेदांग निघण्टु अ० ३ ख० १७ मे अहिंसा लिखा है। वेदांग निरुक्त नैगमकाण्ड पूर्वार्द्ध अध्याय १ पाद ३ खण्डमे लिखा है—"अध्वर इति यज्ञ नाम ध्वरति

हिंसाकर्म तत्प्रतिषेधः,,। अर्थात् जो हिंसा कर्मका निषेध करे उसे अध्वर कहते हैं।

तथा वेदमें भी अध्वर शब्दका अर्थ अहिंसा लिखा है।

यथा—अम्बयो यन्त्यध्वभि जमियों अध्वरीयताम्। पृश्वतीमधुना पयः।१। इति अथर्ववेद का० १ अनुवाक १ सूक्त ४॥ अर्थ—पाने योग्य मातायें और मिलकर भोजन करनेवाली बहिनें वा कुलस्त्रिया मधुके साथ दूधको मिलाती हुईं हिंसा न करनेवाले यजमानोंके सन्मार्गमे चलती हैं। अन्यच्च देवी भागवत्—जिसमें हिंसा हो वह सत्य नही है। जिसमे दया उपकार हो वह असत्य भी सत्य है ( १ ) श्लोक १ स्क० ३ अ० ११।

द्विजैर्भोगरतैर्वेदे दर्शितं हिंसनं पशोः।
जिह्वास्वाद परैः कामहिंसैव परामताः॥

( इति स्क० ६ अ० १३ )

अर्थात्—भोगोमे रक्त ब्राह्मणोने अपनी रसनास्वादके लिये वेदमे पशु हिंसाका विधान किया है।

अहिंसाके समान परम पवित्र धर्म दूसरा नही है। अन्यच्च—जो पुरुष या स्त्री देवी-देवताओंको मनुष्य या पशुकी बलि देते हैं और माँस खाते हैं वे नरकोंमे उन्हीं जानवरोंसे खाये जाते हैं। इति स्क० ८ अ०१३॥ अन्यच्च वा० पु०—अपने प्राणोंको छोड़ना अच्छा है, किन्तु किसीकी हिंसा करना अच्छा नही है, मौन करना अच्छा है, परन्तु असत्य बोलना अच्छा नहीं, नपुंसक होना अच्छा है, परन्तु परस्त्री रमण करना अच्छा नहीं, भिक्षा मागना अच्छा है, परन्तु परधनका हरण अच्छा नही।

अब आप लोग विचारिये कहाँ तो सनातनधर्मका इतना ऊंचा सिद्धान्त,

कहा—उन्हींके नामपर मूक बकरे भैंसे आदि पशुओंकी बलि करना और उनको खा जाना।

वराह पुराणमें भी कहा है—"हिंसको दुष्टयोनिजः,,

श्लोक ६५ अ० १२६ ॥ वृथामांसरतो नित्यं सच प्रेतोऽभिजायते। अ० १७४ ॥

दुर्गाकी प्रीतिके लिये हिंसा किन किन प्राणियोंको लगती है, सो कहते हैं—(१) बेचने वाला (२) खरीदने वाला (३) काटनेवाला (४) इस कार्यकी प्रशंसा करनेवाला (५) बलिदानके लिये पशुपालन करनेवाला (६) आगेसे खींचने वाला (७) पीछेसे धक्का देनेवाला।

इति महा भा० अ० ९० शांति पर्व।

मनुने सब कर्म हिन्सासे रहित ही कहे हैं लुब्धक धनके लोभी नास्तिक लोगोंने वेद-वचनोंको न जानकर यज्ञमें हिन्साका वर्णन किया है। यथा—

लुब्धैर्धूर्तपरैर्ब्रह्मन् नास्तिकैः सम्प्रवर्तितं,
वेदवादानविज्ञाय सत्याभासमिवानृतम् ॥

( इति शान्ति पर्व मोक्ष धर्म अ० ९० )

मनुरुवाच—

न भक्षयतियोमांसं न च हन्यात् न घातयेत्,
स मित्रं सर्व भूतानां मनुः स्वयम्भुवोऽब्रवीत् ॥

अर्थात्—जो मांस न खाता है और न मारता है, न अन्य किसीसे मरवाता है, वह सब जीवोंका मित्र है, ऐसा आचार्य मनुने कहा है।

"अहिंसा परमो धर्म इति वेदेषु गीयते ॥६३॥

इति पद्म० पु० उ० ख० अ० ॥६४॥

सर्वे तनुभृतस्तुल्या यदि बुद्धया विचार्यते
इदं निश्चित्य केनापि न हिंस्यः कोऽपि कुत्रचित्
( रुद्र पुराण )

अर्थात्—यदि बुद्धिसे विचारा जाय तो समस्त जीव एक समान है, ऐसा विचार कर कहीपर भी किसी जीवको न मारना चाहिये।

जीव दयाके तुल्य ससारमें अन्य धर्म नहीं है, इसलिए सब प्रकारके जीवोंपर दया करना चाहिये। एक जीवकी रक्षा करना तीनों लोकोंकी रक्षा करनेके समान है। एक जीवका घात तीन लोकके प्राणियोंके घात करनेके समान है। हिंसाके समान पाप तीनो लोकमें कोई नहीं है, अहिंसक स्वर्गमें जाता है। दान अनेक प्रकारका है:—उन दानोंसे जितना फल मिलता है, अभय दानका फल उनमे दशगुना है। डरे हुएको अभय दान देना चाहिये। जो रोगसे पीड़ित हैं उन्हें औषधि देना चाहिये, विद्यार्थीको विद्या देना चाहिये, और भूखेको भोजन देना चाहिये। जो कुछ दान पुजनादि हैं उनका फल अभय दानके सोलहवे भागके बराबर भी नही है। इति रुद्र पुराण।

पद्मपुराणमे भी कहा है—यदि यज्ञमें पशु मार कर और रुधिरका कीचड़ करके मनुष्य स्वर्गमे जावे तो बताओ नरकमें कौन जावेगा। तथा हि—

यज्ञं कृत्वा पशुं हत्वा कृत्वा रुधिरकर्दमं।
यद्येव गम्यते स्वर्गो नरकः केन गम्यते॥ ३२३॥

बृहद् खण्ड अध्याय १३

आकाशगामी अर्थात् उच्च कुलीन मास भक्षणसे रसातलकी ओर चले गये उनको स्वर्ग कभी मिलेगा ही नही। ३२५॥

जितने भी जीव हैं सबको प्राण प्यारे हैं। फिर अपने मासके सामने दूसरेका मास पडित कैसे खाये।

यदि यज्ञ कर्मकी हिसा दूसरों को सुखदायी है। तो यजमान यज्ञमें अपने पिता और माताको क्यों न मार डाले।

**निहतस्य पशोर्यज्ञे स्वर्गप्राप्तिर्यदीष्यते।**
**स्वपिता यजमानेन किंनातत्र न हन्यते ॥३६७॥**

और कहा भी है—यथा समुद्र में टेढी और सीधी सभी तरह की नदी प्रवेश करती हैं वैसे ही सर्व धर्मों का अहिंसा मे प्रवेश होता है। तथा हि—

**प्रविशन्ति यथा नद्यः समुद्रमृजुवक्रगाः।**
**सर्वे धर्मा अहिंसायां प्रविशन्ति तथा दृढम् ॥३७४॥**

इति स्वर्ग खण्ड अध्याय ३१

महाभारत अनुशासन पर्व अध्याय ११५

मांस, लकड़ी पत्थर घासादि से उत्पन्न नही होता किन्तु किसी जीवकी देह काटने से ही पैदा होता है इसीसे जीवोंके काटने से पाप लगता है तुम अपनी देह काट कर देख सकते हो तुमको कितना दु ख होता है। वैसा ही दूसरोंको भी होगा। इसलिये प्रत्येक मनुष्यका कर्तव्य है कि "आत्मनः प्रति कूलानि परेषा न समाचरेत्" अर्थात जो अपनेको अनिष्ट है उनको दूसरोंके लिये भी न करें।

## नास्तिक धर्म

जो हिंसामे तत्पर हैं और मोहसे युक्त हैं वे लोग नरकमें जाने वाले हैं और वे ही नास्तिक हैं। तथाहि —

**हिंसापराश्च ये केचित् ये च नास्तिकवृत्तयः।**
**लोभ मोह समायुक्ताः खलु ते नरकगामिनः॥**

( इति महाभारत अश्वमेधिक पर्व अध्याय ५वां )

पशु धर्मः—जो लोग माँस भक्षी हैं, शराब पीते हैं निरक्षर भट्ट हैं, पृथ्वीके भार स्वरूप हैं वे बिना पूँछके व्याघ्र हैं।

( इति चाणक्य नीति अध्याय आठवां )

सर्व सामान्य धर्मः—क्रोधका जीतना, इंद्रियोंका निग्रह करना हिंसाके भेदोंमें से किसी प्रकार की भी हिंसा नहीं करना यह धर्म छोटेसे लेकर बड़े तकका एक समान है इसमें कोई जाति पातिका भेदभाव नहीं है।

मलेच्छ और उच्च जातिके भेदका वर्णन यह हैः—

कोई जातिसे न ब्राह्मण है न क्षत्रिय है न सर्वथा कोई शूद्र व म्लेच्छ है। जिन्होंने अपने धर्मको छोड़ दिया है, जो दया रहित हो परके सताने वाले व अत्यन्त क्रोधी हिंसक चांडाल हैं वे ही म्लेच्छ और अविवेकी हैं।

मात्र वेदोंको पढकर कोई पंडित नहीं हो सकता। जैसे गधेकी पीठपर चीनी (शक्कर) की बोरी लदी हुई हो वह उसके स्वादको नहीं जान सकता वैसे बहुतसे शास्त्रोंको पढकर भी जो उनपर आचरण नहीं करता वह वेदोंके रहस्यसे अनभिज्ञ है। ( इति शुक्र नीति )

**अधो गच्छन्ति तामसाः**

( ईश्वर कृष्ण रचित सांख्यकारिका )

इनके अतिरिक्त हमारे पास हजारोंकी संख्यामें वेद पुराणादिके प्रमाण संकलित हैं जो महानुभाव देखना चाहते हों वे अहिंसा प्रचारक कार्यालयमें

आकर सहर्ष देख सकते हैं और अपनी शङ्काओंका निराकरण कर सकते हैं। विस्तारसे यहां अधिक नहीं लिखा गया है।

पाठकगण उपर्युक्त प्रमाणोंसे ही बलि प्रथाके औचित्य अनौचित्यकी परीक्षा कर सकते हैं। बलि प्रथाकी बाबत हमारे पूज्य दयालु महर्षियोंने जो भाव व्यक्त किये हैं और जो आदर्श हमारे सामने रक्खा है वह विचारणीय है। हमारा कर्तव्य है कि हम उनके सदुपदेशोंसे सन्मार्गपर आवें "जीवो और जीने दो" के सिद्धान्तको ग्रहण करें। और समझें कि उस सर्वरक्षक परमात्माकी सृष्टिमें से किसी भी जीवके प्राण लेनेका हमें कोई अधिकार नहीं। अन्तमें प्रार्थना है कि पुस्तकके पढनेके साथ इसका शान्त हृदयसे मनन भी करें और आज ही से प्रतिज्ञा करें कि हम धर्म विरुद्ध किसी भी प्राणीकी बलि नही देंगे और इस कुप्रथाको समूल नष्ट करने का प्रयत्न करेंगे। फिर आप देखेंगे कि भारतमे पुन. प्रेमका साम्राज्य होगा राजा और प्रजा सुखी होंगे। और लेखक भी अपना परिश्रम सफल समझेगा।

ओम् शान्ति शान्ति।